आश्विन–कार्तिक 1936 अक्तूबर 2014 खण्ड 26 अंक 10

डीआरडीओ समाचार
डी आर डी ओ की मासिक गृह पत्रिका

डी आर डी ओ ने पर्वतीय क्षेत्र के लिए कम लागत फुट ब्रिज सौंपा

कम लागत वाला फुट ब्रिज।

भारत सरकार के प्रधान वैज्ञानिक सलाहकार, डॉ आर चिदम्बरम ने 17 जुलाई 2014 को रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन की एक प्रमुख प्रयोगशाला, अनुसंधान एवं विकास स्थापना (इंजीनियर्स) (आर एंड डी ई (इंजी), पुणे द्वारा सिविल अनुप्रयोगों के लिए विकसित एक पर्वतीय फुट ब्रिज (पैदल पुल) को हिमालय पर्यावरण अध्ययन और संरक्षण संगठन, देहरादून के पास जनता के उपयोग के लिए सौंप दिया। इस अवसर पर बोलते हुए डॉ चिदम्बरम ने ग्रामीण और दूर–दराज के क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के जीवन में सुधार लाने में एस एंड टी ऐजेंसियों के योगदान पर भी प्रकाश डाला।

रक्षा मंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार, रक्षा अनुसंधान एवं विकास विभाग के सचिव तथा रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन के महानिदेशक श्री अविनाश चन्दर ने अपने संदेश में कहा, "रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन एक नवाचार आधारित संगठन है और यह सुनिश्चित करता है कि उसके द्वारा विकसित प्रौद्योगिकियाँ सशस्त्र बलों के साथ साथ जनता के कल्याण के लिए भी उपयोगी हैं। रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन द्वारा सशस्त्र बलों के लिए विकसित की गयी प्रौद्योगिकी को बाढ़ प्रभावित लोगों की राहत वाले काम के लिए भी उपयोग में लाया जा सकता है। ऐसे दो पुलों को जनता के लिए सौंपना लोगों को

इस अंक में

आई आर डी ई द्वारा स्थिर इलैक्ट्रो ऑप्टिक साइट (दृष्टि) का विकास
डॉ अविनाश चन्दर द्वारा एंटी लॉक ब्रेकिंग सिस्टम टेस्ट ट्रैक का उद्घाटन
22वां प्रो. डी एस कोठारी स्मृति व्याख्यान
कार्मिक समाचार
डी एम आर एल द्वारा राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, वारंगल के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर
पुरस्कार
मानव संसाधन विकास गतिविधियां
रक्षा इलैक्ट्रॉनिक्स अनुसंधान प्रयोगशाला द्वारा मुफ्त चिकित्सा और मधुमेह शिविर का आयोजन
राजभाषा परिशिष्ट

कम लागत वाला फुट ब्रिज।

प्रौद्योगिकियों का बड़े स्तर पर लाभ पहुँचाने वाला एक अच्छा उदाहरण है। 6.5 लाख रुपये की लागत से भी कम कीमत वाला पर्वतीय पैदल पुल (फुट ब्रिज) यातायात एवं स्थापित करने के लिए आसान है और इस प्रकार आपदा वाले क्षेत्रों में राहत और बचाव कार्य को सुविधाजनक बनाने में बडे स्तर पर मदद की उम्मीद की जा सकती है।"

आर एंड डी ई (इंजी.) की अपनी यात्रा के दौरान डॉ चिदम्बरम ने 2013 में उत्तराखण्ड आपदा के बाद उचित कम लागत के पैदल पुल (फुट ब्रिज) के विकास का सुझाव दिया था। यह पुल विशेष रूप से दुर्गम ऊँचाई वाले क्षेत्रों में रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन द्वारा सशस्त्र बलों के लिए विकसित किये गये 0.8 मीटर चौड़ाई वाले एक मार्ग के साथ शुष्क/गीले 35 मीटर तक लम्बे अंतराल को पाटने के लिए 35 मीटर लम्बा मानव संवहन पर्वतीय पैदल पुल का एक रुपांतर है। सिविल अनुप्रयोगों के लिए बने इस 13.5 मीटर लम्बे स्टील के पुल में 1.5 मीटर चौड़ा मार्ग है और इसे 2 से 3 घंटों में स्थापित किया जा सकता है। इसको चालू करने के लिए बाँध को अधिक दूर या कार्यस्थल को विस्तृत करने की जरूरत नहीं होती है इसलिए यह आपदा की स्थिति के बिल्कुल अनूकूल है।

सशस्त्र बलों के लिए विकसित यह पुल 35 मीटर तक की खाई को भरने की क्षमता रखता है और हिमनदों के क्षेत्रों में होने वाली चुनौतियों का सामना कर सकता है। इस मैन पोर्टेबल प्रणाली द्वारा बांध को दूर तक उपयोग किये बिना ही बांध के पास तक पुल का निर्माण किया जा सकता है। पुल के जोड़ों की फिटिंग आसानी से हो जाती है और एक घंटे की भीतर ही इसे चालू किया जा सकता है। पुल 200 किलो घनत्व वाले 250 मिमी ताजे हिमपात की परत के संचय का सामना कर सकता है।

श्री अनिल दातार, विशिष्ट वैज्ञानिक तथा महानिदेशक (ए सी एस), रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन ने इस अवसर पर बोलते हुए रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन की कारपोरेट सामाजिक जिम्मेदारियों पर जोर दिया और स्पिन ऑफ प्रौद्योगिकियों के विकास में रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन के योगदान पर संक्षिप्त प्रकाश डाला। डॉ गुरूप्रसाद, उत्कृष्ट वैज्ञानिक तथा निदेशक, अनुसंधान एवं विकास स्थापना (इंजीनियर्स) ने पुल के विकास को इतिहास के पन्नों में लिपिबद्ध किया। एच ई एस सी ओ के संस्थापक, श्री अनिल जोशी ने हिमालय के दूर–दराज वाले क्षेत्रों में इस तकनीक पर काम करने का वादा किया।

कम लागत वाला फुट ब्रिज हस्तांतरण समारोह के अवसर पर उपस्थित श्री अनिल दातार तथा डॉ चिदम्बरम (दांये से)।

drdo.gov.in/drdo/pub/samachar/index.html

आई आर डी ई द्वारा स्थिर इलैक्ट्रो ऑप्टिक साइट (दृष्टि) का विकास

यंत्र अनुसंधान एवं विकास स्थापना (आई आर डी ई), देहरादून ने द्वि–अक्ष स्थिरीकरण के साथ एक स्थिर इलैक्ट्रो ऑप्टिक साइट (एस ई ओ एस) को विकसित और ऑटामैटिक वीडियो ट्रैकिंग सुविधा से संकलित किया है। स्थिर इलैक्ट्रो ऑप्टिक साइट में तीन विद्युत ऑप्टिकल सैंसर होते हैं अर्थात 3 जी 3–5 माइक्रोफोन (640 × 512 एफ पी ए) आप्टिकल जूम के साथ थर्मल इमेजर (टी आई), ऑप्टिल जूम कैमरे के साथ रंगीन दिवस टी वी और आई सेफ लेजर रेंज फाइंडर (ई एल आर एफ)। दिवस टी वी कैमरे और टी आई में देखने के लिए (NFOV) 0.8°× 0.6° संकीर्ण और (WFOV) 0.8°× 0.6° चौडा व टीआई में 2 × इलैक्ट्रॉनिक जूम का अतिरिक्त क्षेत्र होता है। ये सैंसर एक नाटो (NATO) किस्म लक्ष्य के लिए 7 किलोमीटर की स्वीकृत रेंज प्रदान करते हैं। ई एल आर एफ ± 5 मीटर की सटीकता के साथ 200 मीटर से 9995 मीटर तक के लक्ष्य की रेंज प्रदान करता है।

जिम्बल की मॉड्यूलर खुली वास्तुकला विभिन्न प्रकार के कारकों और आकार के बढ़ते पेलोड (सैंसर) के लचीलेपन को बिना जिम्बल या इलैक्ट्रॉनिक्स पुनर्रचना के सुगम बनाती है। प्रणाली में 510 मिमी आवृति व्यास के साथ, 360 मिमी (चौड़ाई) × 502 मिमी (ऊँचाई) और सभी सैंसरों सहित 52 किलो वजन होता है। ई ओ सैंसर और सर्वो नियंत्रण के लिए मेन–मशीन इंटरफेस 8.5 इंच डिस्प्ले के साथ विषम प्रोग्राम वाले बहुआयामी कार्यों के माध्यम से प्रदान की गयी है जिसे सीधे धूप या सूर्य की रोशनी में भी पढ़ा जा सकता है। सैंसरों को दिगंश (Azimuth) और ऊँचाई या उन्नयन (elevation) की दशा में स्थिर जिम्बल को झटके से घुमाते हुए एक जायस्टिक द्वारा चलाया जा सकता है। दृष्टि गतिविधि की लाइन स्वचलित गतिविधि, हस्तचलित गतिविधि और शून्य गतिविधि जैसी संपूर्ति तकनीक द्वारा पूरी तरह से नियंत्रणीय है।

212 मिमी× 205 मिमी× 132 मिमी आयाम के इष्टतम वास्तुकला वाले कॉम्पैक्ट इलैक्ट्रॉनिक्स हार्डवेयर यूनिट को अधिकतम प्रर्दशन प्राप्त करने के उददेश्य से डिजाइन किया गया है। दो शक्तिशाली डी एस पी प्रोसेसरों को सिग्नल प्रोसेसिंग, सर्वो नियंत्रण एल्गोरिदम और बाहरी इंटरफेस के लिए इस्तेमाल किया गया है। स्थिर इलैक्ट्रो ऑप्टिक साइट (SEOs) को एक धारावाहिक लिंक के माध्यम से बाहरी प्रणाली के साथ एकीकरण को सुगम बनाने के लिए समाकृत (Configured) किया गया है।

एयरोस्टेट बाधाओं में उच्च डिग्री स्थिरीकरण और दिगंश और ऊँचाई अक्ष में बख्तरबंद लड़ाकू वाहन बाधाओं के लिए धुंधलापन रहित इमेज को सुनिश्चित करता है। स्थिर इलैक्ट्रो ऑप्टिक साइट की लाइन के परिचालन को एक दिगंश कोणीय स्वतंत्रता के साथ सक्षम बनाता है जिससे प्रणाली ऑपरेटर रात–दिन विस्तृत एवं

संकीर्ण क्षेत्र में एक चलते या स्थिर वाहन द्वारा लक्ष्य प्राप्ति और ट्रैकिंग के साथ एक व्यापक क्षेत्र पर स्वतंत्र निगरानी करने में समर्थ हो जाता है। दृष्टि (साइट) जो ± 3 पिक्सल सटीकता और अधिकतम 0.1 मील/सैकण्ड से 70 मील/सैकण्ड की ट्रेकिंग दर के साथ हवाई और जमीनी लक्ष्यों पर नजर रखने के लिए एक मजबूत स्वचलित वीडियो ट्रेकर के साथ समाकलित है।

इस साइट की मॉड्यूलर पहुँच से अग्नि नियंत्रण बख्तबंद लड़ाकू वाहनों के लिए समाधान, उच्च गति नौकाओं से निगरानी, कम ऊँचाई वाले हल्के विमान (Low altitude aerostat), त्वरित प्रतिक्रिया सतह से हवा प्रक्षेपास्त्र (सरफेस टू एयर मिसाइल) के लिए ट्रेकिंग प्रणाली जैसे विभिन्न अनुप्रयोगों के लिए एक त्वरित अनुकूलन में परिणाम निकलते हैं।

डॉ अविनाश चन्दर द्वारा एंटी लॉक ब्रेकिंग सिस्टम टेस्ट ट्रैक का उद्घाटन

रक्षा मंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार डॉ अविनाश चन्दर ने 14 जुलाई 2014 को वाहन अनुसंधान एवं विकास स्थापना (वी आर डी ई), अहमदनगर द्वारा विकसित नई एंटी लॉक ब्रेकिंग सिस्टम (ए बी एस) परीक्षण सुविधा का उद्घाटन किया।

श्री अविनाश चन्दर, एंटी लॉक ब्रेकिंग सिस्टम टेस्ट ट्रैक का उद्घाटन करते हुए।

इस सुविधा से पहियों को अनलॉक करके उच्च गति पर आपातकालीन ब्रेक लगाने के दौरान वाहनों को नियंत्रण करने में और इलैक्ट्रॉनिक नियंत्रण इकाई द्वारा प्रत्येक पहिये के लिए अपेक्षित ब्रेकिंग दबाब के वितरण से संकर्षण नियंत्रित करने में मदद मिलती है। इस प्रणाली से व्हील लॉक के कारण चालक द्वारा वाहन पर नियंत्रण खोने से होने वाली गंभीर दुर्घनाओं से बचा जा सकता है। नई सुविधा विभिन्न प्रकार के वाहनों जैसे चार पहिया वाहन, ट्रक, दो पहिया वाहनों सहित ट्रैक्टर–ट्रेलर पर एंटी लॉक ब्रेकिंग सिस्टम की समरूपता बनाती है। कई प्रकार की कम और उच्च घर्षण वाली सतहों को सूखी और गीली स्थितियों के लिए बनाया गया है जिन्हें एक वाहन को अपने जीवन काल में सामना करता है।

एंटी लॉक ब्रेकिंग सिस्टम ट्रैक।

एंटी लॉक ब्रेकिंग सिस्टम ट्रैक पर एक वाहन का परीक्षण।

drdo.gov.in/drdo/pub/samachar/index.html

अपने उद्घाटन भाषण में डॉ अविनाश चन्दर ने कहा कि नई स्वचलित (मोटर वाहन) प्रौद्योगिकियाँ से हाई स्पीड वाले वाहनों को बढ़ावा दिया जा रहा है। इस लिए सरकारी एजेन्सियों के लिए यह कठिन परन्तु महत्वपूर्ण है कि वे वाहन उपयोगकर्ता एवं सड़क पर चलने वाले लोगों की सुरक्षा सुनिश्चित करें। एंटी लॉक ब्रेकिंग प्रणाली (ए बी एस) उन नवीन प्रौद्योगिकियों में से एक है जो ब्रेक लगाते समय वाहन की स्थिरता को सुनिश्चित करती है। एंटी लॉक ब्रेकिंग प्रणाली (ए बी एस) रक्षा बलों द्वारा इस्तेमाल किये गये संवेदनशील हथियारों के सुरक्षित परिवहन में भी मदद करता है। नई जाँच सुविधा प्रदर्शन और मजबूत मूल्यांकन के परीक्षण की लागत को कम करेगी।

वी आर डी ई के निदेशक, डॉ मनमोहन सिंह ने बताया कि परीक्षण मार्गों को मुख्य रूप से वी आर डी ई द्वारा रक्षा वाहन अनुप्रयोगों के लिए विकसित किया गया है। चूँकि देश में वाहन परीक्षण पथ केवल वाहन अनुसंधान एवं विकास स्थापना पर उपलब्ध हैं, ये सुविधाएँ मोटर वाहन उद्योगों के लिए पेश की गयीं है और इन्हें केन्द्रीय मोटर वाहन नियम प्रमाणीकरण के साथ–साथ निर्यात संगतता के उद्देश्य के लिए भी बड़े स्तर पर उपयोग में भी लाया जा रहा है। यह राज्य की अत्याधुनिक सुविधा, एंटी लॉक ब्रेकिंग सिस्टम (ए बी एस) टायर निर्माताओं को उनकी डिजाइन विशेषताओं को बढ़ाने में और सुरक्षा में सुधार लाने में मदद करेगी।

22वां प्रो. डी एस कोठारी स्मृति व्याख्यान

22वां प्रो. डी एस कोठारी स्मृति व्याख्यान का दीप प्रज्ज्वलित कर उद्घाटन करते डॉ चिदम्बरम, व्याख्यान देते हुए।

रक्षा प्रयोगशाला (डी एल), जोधपुर ने 06 जुलाई 2014 को रक्षा मंत्री के सबसे पहले वैज्ञानिक सलाहकार तथा रक्षा प्रयोगशाला, जोधपुर के संस्थापक प्रो. डी एस कोठारी की स्मृति में 22वां प्रो. डी एस कोठारी स्मृति व्याख्यान का आयोजन किया। इस अवसर पर भारत सरकार के प्रधान वैज्ञानिक सलाहकार तथा परमाणु ऊर्जा आयोग के भूतपूर्व अध्यक्ष, डॉ आर चिदम्बरम द्वारा व्याखान दिया गया। डॉ वी भुजंग राव, विशिष्ट वैज्ञानिक एवं महानिदेशक (एन एस एंड एम), रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन ने समारोह की अध्यक्षता की। रक्षा प्रयोगशाला के निदेशक, डॉ एस आर वडेरा ने अतिथियों का स्वागत किया और प्रो. डी एस कोठारी स्मृति व्याख्यान उत्सव के इतिहास के बारे में जानकारी दी। उन्होंने विज्ञान और शिक्षा के क्षेत्र में प्रो. कोठारी द्वारा दिये गये योगदान पर भी प्रकाश डाला।

डॉ चिदम्बरम, व्याख्यान देते हुए।

डॉ वी भुजंग राव ने अपने अध्यक्षीय भाषण में देश के समग्र तकनीकी विकास के लिए प्रो. कोठारी की वैज्ञानिक उपलब्धियों द्वारा के उनके समर्पण पर सविस्तार वर्णन किया। उन्होंने भारतीय रक्षा के लिए रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन की उपलब्धियों के बारे में भी जानकारी दी। डॉ चिदम्बरम ने विकास और सुरक्षा के लिए अर्थव्यवस्था के ज्ञान की जरूरत पर अपना व्याख्यान दिया।

अपने भाषण में उन्होंने देश की सुरक्षा के लिए चुनौतियों पर आधारित प्रौद्योगिकी के विकास की जरूरत पर बल दिया। उन्होंने कहा कि एक देश के रूप में हमें प्रौद्योगिकियों की बाधाओं को पार करने के लिए दुनिया में सबसे बेहतर जानकारी और अपनी क्षमताओं पर पूरा भरोसा करने की जरूरत है। इस अवसर पर श्री जी एल बहेती, वैज्ञानिक जी, श्री गोदाराम, तकनीकी अधिकारी डी तथा श्री एन के सोनी, तकनीकी अधिकारी बी को अपने संबंधित क्षेत्र में उनके सराहनीय योगदान के लिए जीवनकाल उपलब्धि पुरस्कार से नवाजा गया। श्री रविन्द्र कुमार, वैज्ञानिक जी ने धन्यवाद प्रस्ताव पेश किया।

कार्मिक समाचार

नियुक्तियां

उन्नत प्रणाली प्रयोगशाला (ए एस एल), हैदराबाद

उत्कृष्ट वैज्ञानिक डॉ टेस्सी थॉमस को उन्नत प्रणाली प्रयोगशाला (ए एस एल), हैदराबाद का निदेशक नियुक्त किया गया है। डॉ थॉमस ने 1985 में कालीकट विश्वविद्यालय से इलैक्ट्रीकल इंजीनियरिंग से बी. टेक किया है और 1986 में आयुध प्रौद्योगिकी संस्थान (आई ए टी) (अब रक्षा उन्नत प्रौद्यौगिकी संस्थान), पुणे से गाइडेड मिसाइल में मास्टर ऑफ इंजीरियरिंग की उपाधि ली है। उन्होंने 2007 में इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (इग्नू), दिल्ली से संचालन प्रबंधन में एम बी ए किया है और जवाहरलाल नेहरू प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय (जे एन टी यू) से मिसाइल गाइडेन्स में पी एच डी की है। उन्हें 2012 में कल्याणी विश्वविद्यालय, पश्चिम बंगाल से अंतरिक्ष विज्ञान में डॉक्टर ऑफ साइंस की (मानद् उपाधि) के साथ–साथ 2012 में मंगलायतन विश्वविद्यायल, अलीगढ़ से भी डॉक्टर ऑफ साइंस की (मानद् उपाधि) से सम्मानित किया गया।

डॉ थॉमस ने अपने कैरियर की शुरूआत आई ए टी, पुणे से वैज्ञानिक बी के रूप में की। फरवरी 1988 में वह रक्षा अनुसंधान एवं विकास प्रयोगशाला (डी आर डी एल), हैदराबाद चली गयी तथा अग्नि प्रक्षेपास्त्र प्रणाली के अभिकल्पन मार्गदर्शन एवं हार्डवेयर इन लूप प्रणाली से जुड़ गयीं। 1992 में वह अनुसंधान केन्द्र इमारत (आर सी आई), हैदराबाद चली गयी, जहाँ उन्होंने अग्नि–2 ठोस स्वचलित मिसाइल के लिए एक स्पष्ट मार्गदर्शन डिजाइन बनाया। बाद में, वह उन्नत प्रणाली प्रयोगशाला, हैदराबाद चली गयीं और तब से वह सभी अग्नि प्रणालियों (अग्नि–1 से लेकर 5 तक) के लिए मिशन डिजाइन और स्पष्ट मार्गदर्शन डिजाइन कर रही हैं। उन्होंने सभी अग्नि प्रणालियों के लिए 6 डी ओ एफ प्रक्षेपवक्र सिमुलेशन को डिजाइन और विकसित किया है। 27 सालों के अपने कैरियर में उन्होंने मार्गदर्शन, नियंत्रण, जडत्वीय नौपरिवहन, प्रक्षेपवक्र सिमुलेशन जैसे विभिन्न क्षेत्रों में अपना योगदान दिया है।

अग्नि–4 की परियोजना निदेशक के रूप में उन्होंने प्रौद्योगिकियों के लिए अग्रणी प्रौद्यौगिकियों के एक नये सेट की शुरूआत की और देश में पहली बार विश्व तुलनीय सामूहिक अंशों को समग्र राकेट मोटर आवरण के विकास के साथ लम्बी दूरी की भारतीय मिसाइल प्रणालियों के लिए पेश किया।

अग्नि–5 की परियोजना निदेशक (मिशन) के रूप में उन्होंने एक 3 चरण वाले सभी ठोस मार्गदर्शन का उच्च प्रभाव सटीकता के साथ डिजाइन किया। एक परियोजना और प्रौद्यौगिकी अग्रणी के रूप में उन्होंने सामरिक मिशन योजना और बुनियादी ढाँचे के विकास में एक प्रमुख भूमिका निभायी है।

डॉ टेस्सी थॉमस आत्मनिर्भरता में उत्कृष्टता के लिए रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन अग्नि पुरस्कार–2001, पाथब्रेकिंग अनुसंधान/उत्कृष्ट प्रौद्यौगिकी विकास–2007 के लिए रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन पुरस्कार, डी आर डी ओ वार्षिक वैज्ञानिक पुरस्कार–2008, अग्नि–4 के लिए रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन प्रदर्शन उत्कृष्टता पुरस्कार–2011, अग्नि–5 के लिए रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन उत्कृष्टता पुरस्कार–2012, लोक प्रशासन शिक्षाविदों एवं प्रबंधन–2012 में उत्कृष्टता के लिए लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय पुरस्कार, 2009 में इंजीरियरिंग डिजाइन के लिए इंजीनियर्स संस्थान (भारत), राष्ट्रीय डिजाइन और रिसर्च फोरम द्वारा सुमन शर्मा पुरस्कार, वी ए एस वी आई के द्वारा महिला वैज्ञानिकों–2009 के लिए श्रीमती चन्द्राबेन मोहनभाई पटेल औद्योगिक अनुसंधान पुरस्कार, विज्ञान और प्रौद्यौगिकी के क्षेत्र में योगदान के लिए महाराणा मेवाड़ फाउंडेशन द्वारा महाराणा उदय सिंह पुरस्कार–2013, मैडम मैरी क्यूरी महिला विजनाना पुरस्कार–2012, वर्ष 2009 के लिए इंडिया टूडे महिला पुरस्कार, वर्ष 2012 के लिए सी एन एन, आई बी एन भारतीय पुरस्कार, अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस 2013 पर राष्ट्रीय महिला आयोग द्वारा उत्कृष्ट महिला पुरस्कार, अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस 2014 पर केरल कलाकेन्द्र द्वारा श्री रत्ना पुरस्कार, सशक्तिकरण महिला–2014, लिम्का

drdo.gov.in/drdo/pub/samachar/index.html

बुक रिकार्ड पुरस्कार आदि सहित कई प्रतिष्ठित पुरस्कारों की प्राप्तकर्ता हैं।

वह भारतीय राष्ट्रीय इंजीनियरिंग एकादमी (आई एन ए ई) की फैलो, आंध्रप्रदेश विज्ञान एकादमी (ए पी ए एस) की एसोसिएट फेलो, भारतीय अंतरिक्ष समिति (ए एस आई) की आजीवन सदस्य, भारतीय वैमानिकी समिति (ए ई एस आई) की ऐसोसिएट फेलो, इंडियन नेशनल सोसायटी फॉर एयरोस्पेस एंड संबंधित तंत्र (INSARM) और इंडियन सोसायटी फॉर एडवांसमेन्ट ऑफ मैटेरियल एंड प्रोसेस इंजीनियरिंग (ISAMPE) की फैलो हैं।

वैज्ञानिक विश्लेषण समूह (एस ए जी), दिल्ली

उत्कृष्ट वैज्ञानिक डॉ जी अथिथन को 1 अगस्त 2014 से वैज्ञानिक विश्लेषण समूह (एस ए जी), दिल्ली का निदेशक नियुक्त किया गया है। डॉ अथिथन ने 1981 में इलैक्ट्रोनिक्स तथा संचार में बी ई (आनर्स) की डिग्री मद्रास विश्वविद्यालय से और 1997 में भौतिकी (तंत्रिका नेटवर्क) में पी एच डी की डिग्री भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, मुम्बई से प्राप्त की है। अगस्त 1982 में वह परमाणु अनुसंधान के लिए इंदिरा गांधी केन्द्र (आई जी सी ए आर), कलपक्कम में शामिल हो गये जहाँ उन्होंने कम्प्यूटर ग्राफिक्स, कम्प्यूटर सहायक डिजाइन और पेनरोज पैटर्न एवं क्रिस्टल संरचनाओं की माड्लिंग के क्षेत्र में काम किया।

अक्तूबर 1988 में वह उन्नत अंकीय अनुसंधान तथा विश्लेषण समूह (अनुराग), हैदराबाद में शामिल हो गये जहाँ उन्होंने डाटा विजुलाईजेशन, समानान्तर प्रसंस्करण तथा तांत्रिका नेटवर्क पर परियोजनाओं को लेने के अलावा कम्प्यूटर ग्राफिक्स पर अपना काम जारी रखा। अनुराग में उनके अनुसंधान प्रयासों ने अमानिका (ANAMICA) के विकास और चिकित्सा एवं वैज्ञानिक डाटा विजुलाईजेशन के लिए अन्य सॉफ्टवेयर और सामानान्तर कम्प्यूटर की पेस (PACE) श्रृंखला के निर्माण तथा डिजाइन के लिए योगदान दिया। रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन में डिजाइन और इंट्रानेट लागू करने के लिए परियोजना समन्वयक के रूप में उन्होंने द्रोणा (DRONA) नेटवर्क के पहले संस्करण की स्थापना के लिए योगदान दिया। इस कार्यकाल के दौरान उन्होंने मानव स्मृति के होपफील्ड मॉडल की दो बुनियादी समस्याओं को सुलझाने के काम पर अपनी पी एच डी की उपाधि प्राप्त की।

जून 2000 के बाद से वह कृत्रिम ज्ञान तथा रोबोटिकी केन्द्र (केयर), बैंगलूरू के साथ सूचना सुरक्षा के क्षेत्र में काम कर रहे थे। सूचना सुरक्षा प्रौद्योगिकियों के समाधान और विकास के लिए एक बड़ी पहल की परियोजना निदेशक के रूप में उन्होंने रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन के ग्राहकों की निवारक और प्रतिक्रियाशील सुरक्षा की आवश्यकता के लिए एक उत्पाद समूह को पेश किया। विशेष रूप से उन्होंने सूचना सुरक्षा की अवधारणा को विकसित किया और भारतीय सेना के दो सामरिक सी–31 नेटवर्क की सुरक्षा के लिए एक सफल मॉडल के रूप में इसे लागू किया। जनवरी, 2013 के बाद से वह वैज्ञानिक विश्लेषण समूह (एस ए जी), दिल्ली के साथ हैं और उन्होंने रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन की सूचना सुरक्षा प्रक्रियाओं और दिशा–निर्देशों को तैयार करने के साथ–साथ दीर्घकालीन प्रौद्योगिकी योजना के परिप्रेक्ष्य में साइबर सुरक्षा अनुभाग का मसौदा तैयार के लिए योगदान दिया है।

उनके वर्तमान अनुसंधान हितों में सूचना सुरक्षा प्रबंधन, कम्प्यूटेशनल इंटेलीजैंस, नेटवर्क डाटा माइनिंग और साइबर सुरक्षा तकनीकियाँ शामिल हैं। उन्होंने दो वैज्ञानिकों को उनकी पी एच डी के लिए और देश के प्रतिष्ठित संस्थानों में तीन वैज्ञानिकों को उनकी एमएस (इंजीनियरिंग) शोध डिग्री के लिए मार्ग निर्देशन किया। उन्होंने कई राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों और कार्यशालाओं में भाग लिया तथा लगभग 25 शोध पत्रिकाओं और सम्मेलनों की कार्यवाहियों के लिए लगभग 30 पत्रों को भी प्रकाशित किया।

1989 में डॉ अथिथन को भारतीय विज्ञान अकादमी के एक युवा एसोसिएट के रूप में चयनित किया गया था। उन्होंने 1998 में डी आर डी ओ वार्षिक वैज्ञानिक पुरस्कार प्राप्त किया। उन्होंने 2006 में भारत इलैक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड से अनुसंधान एवं विकास उत्कृष्टता पुरस्कार प्राप्त किया। 2005 के दौरान आई ई ई ई के वरिष्ठ सदस्य बन गये। अपनी टीम के अग्रणी के रूप में आपने वर्ष 2008 के लिए आत्मनिर्भरता में उत्कृष्टता के लिए अग्नि पुरस्कार प्राप्त किया।

डी एम आर एल द्वारा राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, वारंगल के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर

डॉ गोखले (बांये) तथा प्रोफेसर श्रीनिवास राव समझौता ज्ञापन प्रलेखों के साथ।

रक्षा धातुकर्मीय अनुसंधान प्रयोगशाला (डी एम आर एल), हैदराबाद एवं राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, वारंगल के बीच सामग्री पर सहयोगात्मक अनुसंधान के लिए 8 जुलाई 2014 को एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किये गये। समझौते पर उत्कृष्ट वैज्ञानिक तथा रक्षा धातुकर्मीय अनुसंधान प्रयोगशाला के निदेशक, डॉ अमोल ए गोखले तथा राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान के निदेशक, प्रो. टी श्रीनिवासन राव द्वारा हस्ताक्षर किये गये थे।

समझौता ज्ञापन के दायरे में संयुक्त रूप से अनुसंधान परियोजना में सामग्री पर आपसी हित, रक्षा धातुकर्मीय अनुसंधान प्रयोगशाला के वैज्ञानिकों, एम टेक तथा पी एच डी के लिए जूनियर शोधकर्ता (फैलो), वरिष्ठ शोधकर्ता (फेलो), अपनी बैठकों के विषय में एन आई टी डब्ल्यू की सभी योग्यता मानदंडों के लिए एन आई टी डब्ल्यू छात्रों के बाहय पंजीकरण और प्रत्येक दूसरे संस्थानों की सुविधाओं का उपयोग एवं संबंधित संस्थानों की प्रक्रियों के अनुसार उनकी उपलब्धि को शामिल किया गया है।

drdo.gov.in/drdo/pub/samachar/index.html

पुरस्कार

रक्षा धातुकर्मीय अनुसंधान प्रयोगशाला (डी एम आर एल), हैदराबाद

रक्षा धातुकर्मीय अनुसंधान प्रयोगशाला, हैदराबाद के डॉ आशिम कुमार मुखोपाध्याय, वैज्ञानिक जी को एल्यूमीनियम मिश्र की भौतिक एवं यांत्रिक धातु विज्ञान के क्षेत्र में और वाणिज्यक उत्पादन और विकास के लिए इन सामग्रियों के संरचनात्मक अनुप्रयोगों में अपनी निरतंर और महत्त्वपूर्ण तकनीकी एवं वैज्ञानिक योगदान के लिए ए एस एम इंटरनेशनल सोसायटी का फैलो चुना गया।

उच्चतर योग्यता

रक्षा खाद्य अनुसंधान प्रयोगशाला (डी एफ आर एल), मैसूर के श्री जोन्सी जार्ज, वैज्ञानिक डी को उनके शोध शीर्षक 'इंवेस्टीगेशन ऑन वाटर सोल्यूबल पोलिमर बेस्ड नैनो कम्पोजिट यूजिंग बैक्टीरियल सेलूलोज नानोक्रिस्टल एंड ऑर्गेनिकली मॉडीफाइड नैनोक्लेज एज रेनफोर्सिंग फिलर्स' के लिए विश्वेश्वरिया प्रौद्यौगिकी विश्वविद्यालय, बेलगांव, कर्नाटक द्वारा पी एच डी की उपाधि से सम्मानित किया गया।

द्विभाषी अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन
सूचना प्रौद्योगिकीः कल, आज, और कल

फरवरी 2015, दिल्ली, भारत

Bilingual International Conference

Information Technology: Yesterday, Today, and Tomorrow

February 2015, Delhi, India

मुख्य संरक्षक : डॉ अविनाश चंदर, रक्षा मंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार, सचिव, रक्षा अनुसंधान तथा विकास विभाग एवं महानिदेशक रक्षा अनुसंधान तथा विकास संगठन

Chief Patron : Dr. Avinash Chander, SA to RM, Secretary, Defence R&D, and DG, DRDO

संरक्षक : डॉ जी मालकोंडय्या, विशिष्ट वैज्ञानिक एवं मुख्य नियंत्रक अनुसंधान तथा विकास (मानव संसाधन)

Patron : Dr. G Malakondaiah, DS and CC R&D (HR)

सम्मेलन का उद्देश्य

सूचना प्रौद्योगिकीः कल आज और कल नामक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का उद्देश्य अकादमिकगणों, वैज्ञानिकों, शोधकर्ताओं, तथा विद्वानों के मध्य परस्पर विचार-विमर्श, उनके द्वारा किए गए शोध पर परिचर्चा, तथा नवीन विधाओं का सृजन है। इस सम्मेलन से बहुआयामी शोधपरक विचारों का सृजन, अद्यतन प्रौद्योगिकियों की समालोचना, प्रौद्योगिकीय अनुप्रयोग में आने वाली व्यावहारिक चुनौतियां, सामाजिक सरोकारों, तथा नवीन शोध की दिशाएं स्थापित होंगी।

Conference Objective

The International Conference on Information Technology: Yesterday, Today, and Tomorrow; aims to bring together leading academicians, scientists, researchers, and research scholars to exchange and share their experiences, and research results about all aspects of information technology. It also provides the premier interdisciplinary forum for researchers, practitioners and educators to present and discuss the most recent innovations, trends, concerns, practical challenges encountered, and the solutions adopted in the field of information technology.

Important Dates

Conference Dates: Second half of February 2015

Paper submissions

Full paper submission: 01 December 2014

Notification of acceptance: 20 December 2014

Organising centre : Defence Scientific Information & Documentation Centre (DESIDOC) DRDO, Metcalfe House Delhi-110054

महत्वपूर्ण तिथियां

सम्मेलन की तिथियांः फरवरी 2015 के दूसरे पखवाड़े में

पूर्ण आलेख प्राप्त करने की अंतिम तिथिः 01 **दिसम्बर** 2014

सम्मेलन हेतु आलेख के चयन की सूचनाः 20 **दिसम्बर** 2014

आयोजकः रक्षा वैज्ञानिक सूचना तथा प्रलेखन केन्द्र (डेसीडॉक), डी आर डी ओ, मेटकॉफ हाउस, दिल्ली-110054

संपर्क

श्री सुरेश कुमार जिंदल, निदेशक, डेसीडॉक

श्री फूलदीप कुमार, प्रमुख, डिजिटल संग्रह, विज्ञान संचार, तथा राजभाषा प्रभाग

रक्षा वैज्ञानिक सूचना तथा प्रलेखन केन्द्र (डेसीडॉक), मेटकॉफ हाउस, दिल्ली-**110054**

दूरभाषः **011-23902530**, ई-मेलः **director@desidoc.drdo.in, itconf2015@gmail.com**

Contact

Shri Suresh Kumar Jindal, Director, DESIDOC

Shri Phuldeep Kumar, Head, Digital Archieve, Science Communication, and Official Language Division

Defence Scientific Information & Documentation Centre (DESIDOC), DRDO, Metcalfe House, Delhi-110054

Contact number: 011-23902530, E-mail: director@desidoc.drdo.in, itconf2015@gmail.com

Language of paper and presentation : Hindi or English

Fees: For Participants: Rs 1000

For Paper Contributors, whose papers are selected for presentation: Nil

For more details please refer itytt.drdo.res.in

आलेख की भाषाः आलेख हिन्दी एवं अंग्रेजी में स्वीकार्य हैं।

आलेख प्रस्तुति का माध्यमः हिन्दी अथवा अंग्रेजी।

सम्मेलन शुल्कः प्रतिभागियों के लिए 1000 रूपये।

शोध पत्र प्रदाताओं के लिए कोई शुल्क नहीं, यदि उनका आलेख प्रस्तुति हेतु चयनित किया जाता है।

कृपया अधिक जानकारी के लिए **itytt.drdo.res.in** देखें।

मानव संसाधन विकास गतिविधियां

सम्मेलन/सेमिनार/विचार–गोष्ठी/प्रशिक्षण पाठ्यक्रम/बैठक

प्रशिक्षण एवं जागरुकता कार्यक्रम

श्री सुरेश कुमार जिंदल, निदेशक, डेसीडॉक, उद्घाटन उद्बोधन देते हुए।

डॉ तमिलमणि, प्रतिभागियों को सम्बोधित करते हुए।

रक्षा वैज्ञानिक सूचना एवं प्रलेखन केन्द्र (डेसीडॉक), दिल्ली द्वारा 15 जुलाई 2014 को ई–संसाधनों के उपयोग पर एक प्रशिक्षण एवं जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। दिल्ली स्थित विभिन्न डी आर डी ओ प्रयोगशालाओं/स्थापनाओं के 150 से भी अधिक अधिकारियों ने जागरुकता कार्यक्रम में भाग लिया। एडूसरी, इंफोमेटिक इंडिया, निम्बस और ई बी एस सी ओ के विशेषज्ञों के अतिरिक्त आई ई ई ई, एन पी जी, ए सी एम, ए एस एम ई, आई एच एस, जेन्स, टी एंड एफ, ए आई ए ए, एल्जेवियर, ए ए ए एस/सांइस जैसे प्रकाशकों के प्रतिनिधियों ने प्रशिक्षण लिया। डेसीडॉक के निदेशक, श्री सुरेश कुमार जिंदल ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया। श्री जिंदल ने डेसीडॉक द्वारा प्रदान की गयी सेवाओं पर प्रकाश डाला और इन सेवाओं का बेहतर उपयोग करने के लिए रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन समुदाय का आह्वान किया। ई–पत्रिका सेवा के प्रमुख, श्री योगेश मोदी ने प्रशिक्षण का आयोजन किया।

युवा वैज्ञानिकों के लिए संगोष्ठी (सेमिनार)

गैस टरबाइन अनुसंधान स्थापना (जी टी आर ई), बैंगलूरू ने 05 जुलाई, 2014 को युवा वैज्ञानिकों के लिए 19वीं संगोष्ठी का आयोजन किया। डॉ के तमिलमणी, विशिष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक (हवाई), रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन, ने आत्मनिर्भरता के लिए हवाई–इंजन (Aeroengine) विकास विषय पर दिए गए अपने व्याख्यान में घरेलू बाजार में मौजूद एयरो इंजन की संभावित मांग तथा आयात किये जाने पर मौद्रिक निहितार्थ की व्याख्या की। श्री सुरेश बाबू एस, वैज्ञानिक बी ने भी गैस टरबाइन इंजन के बोरेस्कोपिक निरीक्षण पर एक व्याख्यान दिया जिसमें उन्होंने इंजन की निगरानी के महत्त्व पर प्रकाश डाला।

नवोत्कर्ष 2014

विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम 'नवोत्कर्ष 2014' के उद्घाटन अवसर पर मंचासीन सीफीस, दिल्ली की निदेशक, डॉ (श्रीमती) चित्रा राजगोपाल, सेपटेम, दिल्ली के पूर्व अध्यक्ष, श्री एस सी नारंग (बांये)।

नाभिकीय औषधि तथा संबद्ध विज्ञान संस्थान (इनमास), दिल्ली द्वारा डी आर टी सी कर्मियों को मूल्यांकन बोर्ड के समक्ष प्रभावी तरीके से चर्चा करने के वास्ते उन्हें सक्षम बनाने के लिए एक विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम 'नवोत्कर्ष 2014' का आयोजन किया गया था। अग्नि, पर्यावरण एवं विस्फोटक सुरक्षा केन्द्र (सीफीस), दिल्ली की निदेशक, डॉ (श्रीमती) चित्रा राजगोपाल ने प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन किया। कार्मिक प्रतिभा

drdo.gov.in/drdo/pub/samachar/index.html

प्रबंधन केन्द्र (सेपटेम), दिल्ली के पूर्व अध्यक्ष, श्री एस सी नारंग, डॉ राजीव विज, वैज्ञानिक एफ, इनमास; डॉ विनीत द्विवेदी, वैज्ञानिक विश्लेषण समूह (एस ए जी), दिल्ली; श्रीमती सुमति शर्मा, रक्षा वैज्ञानिक सूचना तथा प्रलेखन केन्द्र (डेसीडॉक), दिल्ली तथा डॉ रविन्द्र यादव, रक्षा मनोवैज्ञानिक अनुसंधान संस्थान (डी आई पी आर), दिल्ली ने प्रतिभागियों को प्रस्तुतियाँ और टिप्स दिये।

रडार ई सी एम प्रौद्यौगिकियों तथा प्रणाली पर पाठ्यक्रम

रक्षा इलैक्ट्रॉनिक्स अनुसंधान प्रयोगशाला (डी एल आर एल), हैदराबाद ने 23–27 जून, 2014 के दौरान रडार ई सी एम प्रौद्यौगिकियों और प्रणाली में नवीनतम रुझानों पर एक पाठ्यक्रम का आयोजन किया। पाठ्यक्रम का उद्घाटन मुख्य अतिथि, डॉ सी जी बालाजी, रक्षा इलैक्ट्रॉनिक्स अनुसंधान प्रयोगशाला के उत्कृष्ट वैज्ञानिक द्वारा किया गया। डॉ बालाजी ने अपने उद्घाटन भाषण में इलैक्ट्रॉनिक्स युद्ध के क्षेत्र में रडार ई सी एम प्रौद्यौगिकियों के महत्व और नवीनतम रुझानों के अनुप्रयोगों पर प्रकाश डाला। विभिन्न रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन प्रयोगशालाओं/स्थापनाओं से 32 प्रतिभागियों ने पाठ्यक्रम में भाग लिया। रडार डिजाइन के मूलभूत सिद्धांत और रडार प्रणाली डिजाइन में नवीनतम रुझानों, ई सी सी एम सुविधाओं के साथ मिसाइल साधक डिजाइन, रडार ईडब्ल्यू अवलोकन, डी आर एफ एम आधारित ई सी एम उप प्रणाली में विभिन्न मॉड्यूल की डिजाइन सुविधाओं सहित आदि व्यापक विषयों को कोर्स में शामिल किया गया है।

परियोजना प्रबंधन में प्रमाण–पत्र पाठ्यक्रम

प्रौद्यौगिकी प्रबंधन संस्थान (आई टी एम), मसूरी द्वारा 23–27 जून 2014 के दौरान टी टी सी, बैंगलूरू में परियोजना प्रबंधन में प्रमाण–पत्र (सी आई पी एम) पर एक पांच दिवसीय पाठ्यक्रम आयोजित किया गया। पाठ्यक्रम का उद्देश्य परियोजना प्रबंधन और विभिन्न उपकरणों तथा परियोजना प्रबंधन की तकनीक के मूल सिद्धांतों के साथ प्रतिभागियों को परिचित करवाना था ताकि वे रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन की समयबद्ध परियोजनाओं में अधिक प्रभावी ढंग से योगदान कर सकें। पाठ्यक्रम का उद्घाटन मुख्य अतिथि, डॉ जी मालकोण्डैया, विशिष्ट वैज्ञानिक तथा मुख्य नियंत्रक

पाठ्यक्रम के उद्घाटन अवसर पर मंचासीन डॉ जी मालकोण्डैया (बांये से दूसरे)।

अनुसंधान तथा विकास (मानव संसाधन) एवं डॉ के तमिलमणी, विशिष्ट वैज्ञानिक एवं महानिदेशक (एयरो) द्वारा डॉ सी पी रामनायारण, उत्कृष्ट वैज्ञानिक और निदेशक, गैस टरबाइन अनुसंधान स्थापना (जी टी आर ई), बैंगलूरू तथा प्रौद्यौगिकी प्रबंधन संस्थान के निदेशक, डॉ एस बी सिंह की उपस्थिति में किया गया। अंतर्राष्ट्रीय परियोजना संस्थान एवं कार्यक्रम प्रबंधन और प्रौद्योगिकी प्रबंधन संस्थान द्वारा प्रमाणीकरण पुरस्कार के लिए ज्ञान स्तर का आंकलन करने वाली एक परीक्षा का भी आयोजन किया गया।

हार्डवेयर इन लूप प्रणाली में हाल के रुझानों पर कार्यशाला

अनुसंधान केन्द्र इमारत (आर सी आई), हैदराबाद द्वारा 10 जुलाई 2014 को हार्डवेयर इन लूप प्रणालियों (एच आई एल एस) में हाल के रुझानों पर एकदिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। श्री जी सतीश रेड्डी, उत्कृष्ट वैज्ञानिक तथा निदेशक, आर सी आई ने कार्यशाला का उद्घाटन किया। डॉ एन प्रभाकर, विशिष्ट वैज्ञानिक मुख्य नियंत्रक अनुसंधान तथा विकास (एस ए एम) इस अवसर पर मुख्य अतिथि थे। विक्रम साराभाई अंतरिक्ष केन्द्र के उप–निदेशक, सी जी एस ई, श्री एम वी डेकाने सम्मानित अतिथि थे। प्रौद्यौगिकी निदेशक तथा आयोजन अध्यक्ष, श्री एल सोभन कुमार ने प्रतिभागियों का स्वागत किया और कार्यशाला के उद्देश्य के बारे में बताया।

श्री सतीश रेडडी ने हार्डवेयर इन लूप प्रणाली (एच आई एल एस) में भावी प्रौद्यौगिकी की शुरूआत तथा किसी भी अनिश्चितता को दूर करने के लिए एकीकृत हार्डवेयर इन लूप प्रणाली (एच आई एल एस) पर बल

दिया। श्री एम वी के एस प्रसाद, वैज्ञानिक एफ ने आर सी आई में हार्डवेयर इन लूप प्रणाली (एच आई एल एस) की वर्तमान स्थिति और भावी योजनाओं को प्रस्तुत किया। हार्डवेयर इन लूप प्रणाली (एच आई एल एस) के क्षेत्र में प्रख्यात विशेषज्ञों द्वारा प्रक्षेपण वाहन और उपग्रह प्रणालियों, हार्डवेयर इन लूप प्रणाली (एच आई एल एस) समाधान, डी आर एफ एम पर आधारित वास्तविक समय रडार लक्ष्य सिम्युलेटर और वास्वविक समय ऑपरेटिंग प्रणाली की अवधारणाओं के लिए छः आमत्रित वार्ता व्याख्यान दिये गये। डॉ प्रभाकर की अध्यक्षता में हार्डवेयर इन लूप प्रणाली (एच आई एल एस) की भविष्य की रूपरेखा के लिए एक पैनल चर्चा का भी आयोजन किया गया। श्री प्रमोद कुमार झा, वैज्ञानिक ई, कार्यशाला के आयोजक सचिव थे।

ऑन बोर्ड सेंसर के स्वदेशी विकास पर कार्यशाला

14 जुलाई 2014 को अनुसंधान केन्द्र इमारत (आर सी आई), हैदराबाद द्वारा ऑन बोर्ड सेंसर के स्वदेशी विकास पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। डॉ एस बी गाडगिल, उत्कृष्ट वैज्ञानिक, अनुसंधान केन्द्र इमारत ने अपने स्वागत भाषण में ऑन बोर्ड सेंसर्स को स्वदेशी करने की आवश्यकता पर बल दिया। श्री जी सतीश रेड्डी, उत्कृष्ट वैज्ञानिक तथा निदेशक, आर सी आई ने अपने उद्घाटन भाषण में विभिन्न मिसाइल परियोजनाओं के लिए विभिन्न प्रकार के सेंसर्स के महत्त्व को समझाया। लगभग 155 प्रतिभागियों ने कार्यशाला में भाग लिया। भारतीय विज्ञान संस्थान, बैंगलूरू की डॉ रंजना ने तनाव सेंसर, कंपन और शॉक सेंसर्स पर व्याख्यान दिया। डॉ हरि कुमार, विक्रम साराभाई अंतरिक्ष केन्द्र, त्रिवेन्द्रम ने ऑन बोर्ड सेंसर के महत्त्व पर प्रकाश डाला। अनुराग सेल, बैंगलूरू के डॉ ए लिंगामूर्ति ने एम ई एम एस आधारित प्रेशर ट्रांस्डूसर की आवश्यकता पर बल दिया। ऑन बोर्ड सेंसर के सभी क्षेत्रों में पैनल चर्चा और एक रूपरेखा के साथ कार्यशाला का समापन हुआ।

विज्ञान परिषद की बैठक

अनुसंधान केन्द्र इमारत (आर सी आई), हैदराबाद द्वारा 3 जुलाई, 2014 को अपनी पहली विज्ञान परिषद की बैठक का आयोजन किया गया। श्री जी सतीश रेड्डी, उत्कृष्ट वैज्ञानिक तथा निदेशक, आर सी आई ने समारोह की अध्यक्षता की। सेंसिंग और फ्लाइंग पर दो व्याख्यानों की बैठक का उददेश्यः डॉ संजय साने द्वारा इंसेक्ट फ्लाइंग और श्री वेद वीर आर्य, डी एफ ए द्वारा विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी पर प्राचीन भारत के योगदान का आयोजन किया गया।

drdo.gov.in/drdo/pub/samachar/index.html

डी एल आर एल द्वारा मुफ्त चिकित्सा तथा मधुमेह शिविर का आयोजन

रक्षा इलैक्ट्रॉनिक्स अनुसंधान प्रयोगशाला (डी एल आर एल), हैदराबाद द्वारा 16 जुलाई 2014 को मुफ्त चिकित्सा तथा मधुमेह शिविर का आयोजन किया गया। हैदराबाद नर्सिंग होम के मेडिकल स्टाफ द्वारा रक्त चाप और मधुमेह परीक्षण का आयोजन किया गया। डी एल आर एल के विशिष्ट वैज्ञानिक और निदेशक, श्री एस पी दास ने शिविर का दौरा किया और कर्मचारियों के स्वास्थ्य समस्याओं के बारे में पूछा।

मुफ्त चिकित्सा तथा मधुमेह शिविर का दृश्य।

लगभग 310 कर्मचारियों ने शिविर का फायदा उठाया। रक्षा इलैक्ट्रॉनिक्स अनुसंधान प्रयोगशाला कार्य समिति और रक्षा इलैक्ट्रॉनिक्स अनुसंधान प्रयोगशाला के चिकित्सा अधिकारी डॉ लालकृष्ण कल्याण ने शिविर का संयोजन किया।

आयुध अनुसंधान तथा विकास स्थापना (ए आर डी ई), पुणे

श्री कपिल देव, सह निदेशक, दीप प्रज्ज्वलित कर हिन्दी पखवाड़े का उद्घाटन करते हुए।

आयुध अनुसंधान एवं विकास संस्थापन में दिनांक 15 सितम्बर 2014 से 26 सितम्बर 2014 को हिन्दी दिवस मनाया गया तथा दिनांक 15 सितम्बर 2014 को हिन्दी दिवस मनाया गया। हिन्दी पखवाड़े का उद्घाटन कार्यक्रम सह निदेशक महोदय, श्री कपिल देव, वैज्ञानिक जी की अध्यक्षता में किया गया। 'हिन्दी राजभाषा कैसे बनी' इस पर उपाध्यक्ष महोदया, श्रीमती श्यामला कुलकर्णी द्वारा संकलित फिल्म के प्रस्तुतीकरण का लाभ सभी कर्मचारियों ने उठाया।

इस अवसर पर अपने संदेश में सह निदेशक महोदय ने राजभाषा के प्रति अपनी निष्ठा प्रकट करते हुए कहा कि सबसे पहले हमें अपनी राजभाषा के प्रति अभिमान होना जरूरी है। हम सभी को अपने अंतर मन से हिन्दी में काम करने की इच्छा होनी चाहिए।

पखवाड़े के अंतर्गत विभिन्न प्रकार की 10 प्रतियोगिताएँ, जैसे हिन्दी अनुवाद, टिप्पणी लिखना, निबंध लिखना, कार्यालय ज्ञान, पत्राचार, फैक्स, प्रश्न मंजूषा (क्विज) का आयोजन किया गया। स्थापना के अधिकारियों/कर्मचारियों ने इन प्रतियोगिताओं में बढ़–चढ़ कर भाग लिया। कुल 61 प्रतियोगियों ने पुरस्कार प्राप्त किए। पखवाड़े का समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह दिनांक 26 सितम्बर 2014 को मुख्य अतिथि, डॉ मिलिंद मोडक (विख्यात अस्थिरोग विशेषज्ञ, दीनानाथ हॉस्पिटल, पुणे) की उपस्थिति में तथा निदेशक महोदय एवं उत्कृष्ट वैज्ञानिक, डॉ के एम राजन साहब की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। मुख्य अतिथि महोदय ने 'सूर्य नमस्कारः एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण' इस विषय पर उपयुक्त व्याख्यान दिया जो सभी के लिए अत्यंत लाभदायक रहा। निदेशक महोदय के करकमलों से मुख्य अतिथि, डॉ मिलिंद मोडकजी को पुष्पगुच्छ एवं स्मृति चिह्न भेंट देकर सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर विजेताओं को मुख्य अतिथि महोदय के करकमलों से पुरस्कार प्रदान किए गए। जिन प्रतिभागियों को पुरस्कार प्राप्त नहीं हुए उन सभी प्रतिभागियों को प्रतिभागिता पुरस्कार देकर उनके प्रयासों को सराहा गया। निदेशक महोदय ने सभी विजेताओं को बधाई दी और हिन्दी पखवाड़े के सफल आयोजन के लिए राजभाषा समिति एवं आयोजक समिति के कार्य की सराहना की। हिन्दी पखवाड़े के सफल एवं उत्कृष्ट आयोजन के लिए जिन समूहों ने अपनी मौलिक सेवाएँ प्रदान की उनके प्रति और आयोजन समिति के प्रति उपाध्यक्ष महोदया, श्रीमती श्यामला कुलकर्णी ने आभार प्रकट किए।

रक्षा भू-भाग अनुसंधान प्रयोगशाला (डी टी आर एल), दिल्ली

डॉ एम आर भुटियानी, निदेशक, डी टी आर एल, दीप प्रज्ज्वलित कर हिन्दी पखवाड़े का उद्घाटन करते हुए।

प्रयोगशाला की राजभाषा कार्यान्वयन समिति के द्वारा 01 से 15 सितंबर 2014 तक हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया। प्रयोगशाला के निदेशक एवं राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष, डॉ एम आर भुटियानी ने दीप जलाकर हिंदी पखवाड़ा का उद्घाटन किया। उद्घाटन के अवसर पर सभी अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित थे। अपने उद्घाटन अभिभाषण में निदेशक महोदय ने अपने संदेश में उपस्थित सभी सदस्यों के समक्ष यह खुशी जाहिर की कि वे वर्षों से हिन्दी पखवाड़ा में सम्मिलिति होते आए हैं और आज यहाँ निदेशक के रूप में वह पखवाड़ा में सम्मिलित हो रहे हैं। उन्होंने सभी सदस्यों को प्रेरित करते हुए कहा कि सभी लोग अपनी–अपनी रुचि के अनुसार प्रतियोगिताओं

में हिस्सा लें और उन्होंने कहा कि वे भी निबंध प्रतियोगिता और वाद–विवाद प्रतियोगिता में हिस्सा लेंगे। उनका कहना था कि हम ज्यादा से ज्यादा हिंदी में ही बातें करें, ज्यादा से ज्यादा हिंदी में लिखने की कोशिश करें। सभी लिखित प्रतियोगिताओं में हिस्सा लेकर हम अपने हिंदी लेखन के प्रयास को आगे बढ़ा सकते हैं। साथ ही उन्हों ने कहा कि इस प्रयास को हिंदी पखवाड़ा के दौरान तक ही सीमित न रखें बल्कि हमेशा ही हिंदी में काम करने के उद्देश्य को ध्यान में रखें और अपने कर्तव्य के प्रति निष्ठावान बनें।

डॉ एम आर भुटियानी, निदेशक, डी टी आर एल, हिन्दी पखवाड़ा के दौरान पुरस्कार प्रदान करते हुए।

उद्घाटन कार्यक्रम के दौरान श्री अनिल गोस्वामी, राजभाषा अधिकारी ने भी इस अवसर पर सभी सदस्यों को संबोधित किया और हिंदी पखवाड़ा के उद्देश्यों से परिचित कराया। मंच का संचालन श्रीमती अरुण कमल, वरिष्ठ हिंदी सहायक ने किया तथा पखवाड़ा की सभी प्रतियोगिताओं के आयोजन की तिथियों से अवगत कराया। हिंदी पखवाड़ा के दौरान ग्यारह प्रतियोगिताएं आयोजित की गयीं। इनमें से हिंदीतर भाषियों के लिए व मल्टी टास्किंग स्टाफ के लिए अलग से एक–एक प्रतियोगिता रखी गयी थी। अधिकारियों एवं कर्मचारियों के बच्चों के लिए भी निबंध प्रतियोगिता दो वर्गों में आयोजित की गयी। पहला वर्ग था – कक्षा 8 से 12 के बच्चों के लिए एवं दूसरा वर्ग था – कक्षा 5 से 7 के बच्चों के लिए।

सभी प्रतियोगिताओं में प्रयोगशाला के अधिकांश सदस्यों ने काफी उत्साहपूर्वक हिस्सा लिया। पुरस्कारों के निर्णय के लिए दो सदस्यीय समिति गठित की गयी थी जिसके सदस्य थे, हमारी ही प्रयोगशाला के दो वरिष्ठ वैज्ञानिक गण, श्री डी एन वर्मा, वैज्ञानिक एफ एवं श्रीमती गीता गुप्ता, वैज्ञानिक ई। निर्णायक मंडल के दोनों ही सदस्यों ने, सभी प्रतियोगिताओं में पूरी रुचि लेते हुए अपनी उपस्थिति दर्ज कर प्रतिभागियों का उत्साहवर्द्धन किया।

15 सितंबर को हिंदी पखवाड़ा का समापन समारोह आयोजित किया गया। प्रत्येक प्रतियोगिता के लिए चार–चार पुरस्कार प्रदान किए गए–प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं सांत्वना। हिंदी पखवाड़ा के समापन के अवसर पर निदेशक महोदय ने सभी विजेता प्रतिभागियों को नकद पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र प्रदान किए। इसके अलावा ऐसे प्रतिभागी जो पुरस्कार नहीं प्राप्त कर सके उन सभी को प्रोत्साहन स्वरूप प्रतिभागिता पुरस्कार प्रदान किए गए। पुरस्कार वितरण के बाद निदेशक महोदय ने राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्यों समेत सभी संलग्न अधिकारियों एवं कर्मचारियों को बधाई दी। समापन के मौके पर भी कुछ सदस्यों ने कविताएं भी सुनायीं। अंत में राजभाषा अधिकारी ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

हिंदी कार्यशाला का आयोजन

डॉ एम आर भुटियानी, निदेशक, डी टी आर एल (बांये), हिन्दी कार्यशाला के अवसर पर श्री विक्रम सिंह को स्मृति चिह्न प्रदान करते हुए।

रक्षा भू–भाग अनुसंधान प्रयोगशाला में वित्तीय वर्ष 2014–15 की दूसरी कार्यशाला का आयोजन 15 सितंबर 2014 को किया गया। कार्यशाला का विषय था 'मशीनी अनुवाद'। इस विषय पर व्याख्यान देने के लिए आमंत्रित वक्ता थे, श्री विक्रम सिंह, प्राध्यापक, केन्द्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, गृ मंत्रालय, नई दिल्ली। कार्यशाला के उद्घाटन संभाषण में प्रयोगशाला के निदेशक, डॉ एम आर भुटियानी ने बताया कि इस विषय का चयन विशेष तौर पर इसलिए किया गया कि प्रयोगशाला की गृह पत्रिका 'वसुंधरा' के अगले अंक का प्रकाशन एक तकनीकी विशेषांक के रूप में किया जाना है। इस उद्देश्य से सभी वैज्ञानिकों को हिंदी में मूल रूप से शोध पत्र लिखने या अंग्रेजी के पत्रों को हिंदी में अनूदित करने, दोनों में ही मशीनी अनुवाद से सहायता मिलेगी।

drdo.gov.in/drdo/pub/samachar/index.html

कार्यशाला में श्री विक्रम सिंह जी ने भारत सरकार के द्वारा मशीनी अनुवाद हेतु निःशुल्क जारी सॉफ्टवेयर मंत्र और गूगल में उपलब्ध मशीनी अनुवाद, दोनों के बारे में विस्तार से बताया। मेल के द्वारा इन सॉफ्टवेयरों में अपना विशिष्ट शब्दकोश विकसित करने की पद्धति बताई जिससे अनुवाद की सटीकता क्रमशः बढ़ती जाती है। इसके अलावा विक्रम सिंह जी ने हाल ही में विकसित और अब निःशुल्क उपलब्ध 'स्पीच टू टेक्स्ट' सॉफ्टवेयर के बारे में विस्तार से बताया, जिससे बोलकर हिंदी में टंकण किया जा सकता है। इस सॉफ्टवेयर के माध्यम से अधिकारियों के बीच कम से कम हिंदी टंकण की समस्या का समाधान हो सकेगा।

रक्षा वैज्ञानिक सूचना तथा प्रलेखन केंद्र (डेसीडॉक), दिल्ली

सुश्री मिकी निशियोका, दीप प्रज्ज्वलित कर हिन्दी पखवाड़ा का उद्घाटन करते हुए।

रक्षा वैज्ञानिक सूचना तथा प्रलेखन केंद्र (डेसीडॉक), दिल्ली द्वारा दिनांक 01–17 सितम्बर 2014 के दौरान हिन्दी पखवाड़ा का आयोजन किया गया। पखवाड़े के उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में सुश्री मिकी निशियोका, अतिथि प्राध्यापक, जवाहर नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली को आमंत्रित किया गया। दिनांक 01 सितम्बर 2014 को मुख्य अतिथि जी ने दीप प्रज्ज्वलित कर इसका उद्घाटन किया। अपने उद्घाटन उदबोधन में आपने हिन्दी और जापानी की तुलनात्मकता बताते हुए एक प्रस्तुति दी। आपने जापान में हिन्दी के प्रयोग से संबंधित चर्चा भी की। इससे पूर्व श्री सुरेश कुमार जिन्दल, निदेशक, डेसीडॉक ने सभी का स्वागत करते हुए कार्यालय में हिन्दी में काम करने पर बल दिया तथा सभी का आह्वान किया कि हमें अपने दैनिक कार्यो में अधिक से

हिन्दी पखवाड़ा के दौरान आयोजित प्रतियोगिता का दृश्य।

अधिक हिन्दी का प्रयोग करना चाहिए। हिन्दी पखवाड़े के दौरान निबंध, टिप्पण/प्रारूपण, टंकण, अनुवाद, पोस्टर, कविता पाठ, श्रुतलेख, कहानी कहो एवं वस्तुनिष्ठ प्रश्नावली इत्यादि प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। पखवाड़े में 125 प्रतिभागियों ने भाग लिया तथा सभी को पुरस्कार प्रदान किए गए। इस अवसर पर प्रोत्साहन योजना, वर्ष 2014–15 के लिए भी पुरस्कार प्रदान किए गए।

दिनांक 17 सितम्बर 2014 को पखवाड़े का समापन समारोह आयोजित किया गया। समापन समारोह में हास्य कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। कवियों में सुश्री प्रियंका रॉय; श्री राजीव तनेजा; श्री शम्भू शिखर; श्री दीपक सैनी; श्री अरविंद पथिक; श्री किशोर श्रीवास्तव; सुश्री कमला सिंह जीनत तथा श्री अशोक कुमार ने अपनी–अपनी रचनाओं से सभी श्रोताओं का मन मोह लिया।

हिन्दी पखवाड़ा के समापन समारोह में आयोजित हास्य कवि सम्मेलन में अपनी रचनाओं से श्रोताओं को गुदगुदाते हुए प्रख्यात कवि श्री शम्भू शिखर (बांये) एवं श्री किशोर श्रीवास्तव।

हास्य कवि सम्मेलन का आनंद लेते श्रोतागण।

इस अवसर पर निदेशक महोदय ने पखवाड़े के सफल आयोजन पर हिन्दी अनुभाग को बधाई दी। श्री फूलदीप कुमार, राजभाषा अधिकारी ने डेसीडॉक

कवियों के साथ निदेशक, डेसीडॉक (बीच में)।

परिवार के सभी सदस्यों द्वारा पखवाडे में बढ़–चढ़कर हिस्सा लेने के लिए आभार व्यक्त किया। श्री अशोक कुमार, वैज्ञानिक जी, ने वर्ष भर की हिन्दी गतिविधियों पर संतोष व्यक्त किया। अंत में निदेशक महोदय द्वारा पखवाड़े के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए गए।

हिन्दी कार्यशाला का आयोजन

इस केन्द्र द्वारा दिनांक 18 सितम्बर 2014 को हिन्दी में शोध पत्रिकाएं नामक विषय पर एकदिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। श्री एस के जिंदल, निदेशक, डेसीडॉक ने इसका उद्घाटन किया। अपने उद्बोधन ने निदेशक महोदय ने हिन्दी में प्रकाशित होने वाले पत्र–पत्रिकाओं पर प्रकाश डाला। आपने बताया कि वर्तमान में हमें एक ऐसे प्रकाशन की कमी महसूस हो रही है, जो हमें हमारे शोध को हिन्दी में प्रकाशित करें, ताकि उस ज्ञान से समस्त प्राणी लाभान्वित हो सकें। आपने इस बात पर बल दिया कि डेसीडॉक एक नए प्रकाशन का आरम्भ कर इस अवसर का लाभ उठाना चाहता है।

कार्यशाला में व्याख्यान देने के लिए डॉ एस के द्विवेदी, वैज्ञानिक एफ, कार्मिक प्रतिभा प्रबंधन केन्द्र (सेपटेम), दिल्ली–110054 ; डॉ ओम विकास, तथा डॉ ओ पी शर्मा को आमंत्रित किया गया। तीनों वक्ताओं ने अपने व्याख्यान में हिन्दी में उपलब्ध शोध पत्रिकाओं की जानकारी दी तथा इस बात की आवश्यकता महसूस की कि एक ऐसा प्रकाशन आरम्भ किया जाना चाहिए जिसमें उच्च गुणवत्ता वाले शोध आधारित आलेख प्रकाशित किए जाएं।

डेसीडॉक परिवार के 130 सदस्यों ने इसमें भाग लिया। श्री फूलदीप कुमार, राजभाषा अधिकारी ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया।

प्रमाण तथा प्रायोगिकी स्थापना (पी एक्स ई), चांदीपुर

प्रमाण तथा प्रायोगिकी स्थापना (पी एक्स ई), चांदीपुर में 04 सितम्बर 2014 से 19 सितम्बर 2014 तक हिंदी पखवाड़ा समारोह का आयोजन किया गया था। स्थापना के अपर निदेशक, डॉ ए के सन्नीग्रही, वैज्ञानिक एफ ने मंगलदीप प्रज्ज्वलित कर समारोह का उद्घाटन किया।

12 सितम्बर 2014 को राज्य स्तरीय प्रख्यात कवियों के साथ एक कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया था। इस अवसर पर स्थापना के सह निदेशक, डॉ एन नायक, वैज्ञानिक 'जी' ने ''कविता संकलन'' का अनावरण किया। अधिकारियों एवं कर्मचारियों के बीच विभिन्न प्रतियोगिताओं जैसे हिंदी क्विज़, हिंदी भाषण, अनुवाद, प्रारूप लेखन, निबंध लेखन, हिंदी श्रुतलेखन आदि का आयोजन किया गया था। जिन अनुभागों ने वर्ष 2013–14 के दौरान अधिक कार्यालयी कामकाज हिंदी में किया है उन्हें राजभाषा शील्ड प्रदान किया गया था।

कुछ खट्टा–कुछ मीठा के पखवाड़ा विशेषांक के अनावरण का दृश्य।

समापन समारोह के दौरान माननीय गृह मंत्री, रक्षा मंत्री, एवं रक्षा मंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार के संदेश पढ़े गए। स्थापना के निदेशक, श्री आर अप्पावुराज, वैज्ञानिक 'जी' ने ''कुछ खट्टा–कुछ मीठा'' के पखवाड़ा विषेशांक का अनावरण किया एवं सफल प्रतियोगियों को पुरस्कृत किया। हिंदी पखवाड़ा समारोह के दौरान सभी

हिन्दी पखवाड़ा के अवसर पर आयोजित प्रदर्शनी का दृश्य।

drdo.gov.in/drdo/pub/samachar/index.html

अधिकारियों एवं कर्मचारियों एवं अतिथियों के लिए एक प्रदर्शनी का आयोजन भी किया गया था जिसमें स्थापना के हिंदी कार्यक्रमों का प्रदर्शन किया गया था।

रक्षा अनुसंधान तथा विकास स्थापना (डी आर डी ई), ग्वालियर

मुख्य अतिथि डॉ जे एन गौतम, व्याख्यान देते हुए।

रक्षा अनुसंधान तथा विकास स्थापना (डी आर डी ई), ग्वालियर में दिनांक 15 सितंबर 2014 को विधिवत रूप से हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया गया एवं पखवाड़ा का शुभारंभ किया गया। हिंदी दिवस समारोह में डॉ जे एन गौतम, प्रमुख पुस्तकालय विज्ञान प्रभाग, जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर मुख्य अतिथि एवं वक्ता के रूप में आमंत्रित थे। डॉ गौतम ने राजभाषा हिंदी : वर्तमान परिदृश्य में विषय पर सारगर्भित व्याख्यान दिया। इसके पूर्व राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सचिव, श्री ए सी पांडेय ने हिंदी दिवस के अवसर पर जारी माननीय गृह मंत्री के संदेश का वाचन किया। स्थापना के निदेशक प्रो. (डॉ) एम पी कौशिक ने हिंदी पखवाड़ा के शुभारंभ की घोषणा की तथा अधिकारियों/कर्मचारियों को अपना अधिकतर सरकारी कार्य राजभाषा हिंदी में करने हेतु प्रोत्साहित किया।

हिंदी पखवाड़ा के दौरान हिंदी श्रुतलेख (डिक्टेशन) प्रतियोगिता, सुलेख प्रतियोगिता, हिंदी भाषा ज्ञान, सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता, तथा कंप्यूटर यूनीकोड टंकण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें वैज्ञानिकों/अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने बढ़चढ़कर भाग लिया।

पखवाड़ा समापन समारोह में मुख्य अतिथि एवं वक्ता के रूप में डॉ. दिव्य शंकर शर्मा, पूर्व निदेशक, राजभाषा एवं संगठन पद्धति निदेशालय को आमंत्रित किया गया था। मुख्य अतिथि एवं निदेशक प्रो. (डॉ) एम पी कौशिक ने अपने करकमलों से पुरस्कार विजेताओं एवं निर्णायक मंडल को पुरस्कार एवं प्रशस्ति–पत्र प्रदान किए।

डॉ दिव्य शंकर शर्मा ने 'राजभाषा हिंदी–दशा एवं दिशा' विषय पर ओजस्वी व्याख्यान दिया। इस अवसर पर स्थापना के वरिष्ठ वैज्ञानिक गण व कर्मचारी मौजूद थे।

रक्षा अनुसंधान तथा विकास प्रयोगशाला (डी आर डी एल), हैदराबाद

हिन्दी पखवाड़ा के उद्घाटन अवसर का दृश्य।

रक्षा अनुसंधान तथा विकास प्रयोगशाला (डी आर डी एल), हैदराबाद में हिन्दी दिवस समारोह हिन्दी दिवस समारोह का आयोजन दिनांक 12 सितम्बर 2014 को किया गया। डॉ के जयरामन, निदेशक, डी आर डी एल ने समारोह की अध्यक्षता की। हिंदी दिवस के अवसर पर मुख्य अतिथि के रुप में हिंदी महाविद्यालय के हिंदी विभागाध्यक्ष, डॉ प्रभाकर त्रिपाठी जी को आमंत्रित किया गया था। कार्यक्रम का शुभारंभ एवं अतिथियों का स्वागत

हिन्दी पखवाड़ा के अवसर पर आयोजित प्रदर्शनी का दृश्य।

श्री पवन कुमार वर्मा एवं श्री अरुण कुमार ने किया। श्री दत्तात्रेय के प्रार्थना गीत से सभा का वातावरण पवित्र एवं प्रसन्नमय हुआ तथा मंचासीन विशिष्ट अतिथियों ने दीप प्रज्ज्वलन किया। श्री जी राजेश्वर राव, वैज्ञानिक जी ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया एवं हिंदी दिवस की शुभकामनाएं दीं। राजभाषा अनुभाग की श्रीमती अर्चना पाण्डेय, ने वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत की एवं डी आर डी एल में राजभाषा अनुपालन में रचनात्मक योजनाओं एवं उपलब्धियों से सभा को अवगत कराया।

समारोह के अध्यक्ष, डॉ के जयरामन ने अपने संदेश के दौरान राजभाषा प्रयोग की महत्ता पर प्रकाश

डाला, मिली–जुली भाषा को अपनाने की बात कही तथा प्रयोगशाला में राजभाषा उपलब्धियों की प्रशंसा की और राजभाषा अनुपालन के लिए भरसक प्रयास करने का आग्रह किया।

मुख्य अतिथि, डॉ प्रभाकर त्रिपाठी ने अपने रोचक एवं प्रभावी वाकशैली से सभा में समा बांध दिया। विविध साक्ष्यों के आधार पर उन्होंने बताया कि हिंदी की स्थिति अत्यंत मजबूत है किंतु हिंदी का उत्थान करने वाले मनीशियों को विभिन्न सामाजिक समस्याओं से जूझना पड़ सकता है।

हिंदी दिवस के इस षुभ अवसर पर डीआरडीएल के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने सांस्कृतिक कार्यक्राम प्रस्तुत किए। श्री मनीश कुमार एवं श्री एच पी सिंह ने हास्य कविताएं, प्रस्तुत की। सांस्कृतिक कार्यक्रम के पष्चात मंचासीन अतिथियों ने हिन्दी पखवाड़ा के विजेताओं को नकद पुरस्कार से पुरस्कृत किया। पखवाड़े के दौरान हिंदी लेख, पोस्टर प्रतियोगिता, सुलेख, अनुवाद, अंताक्षरी, कविता पाठ एवं गायन आदि प्रतियोगिताएं आयोजित की गई थी। उपरोक्त प्रतियोगिताओं में लगभग 250 अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया।

उपरोक्त प्रतियोगिताओं के सभी प्रतिभागियों को प्रोत्साहित करने हेतु प्रतिभागिता पुरस्कार भी प्रदान किये गये। उपरोक्त सभी प्रतियोगिताओं का संचालन राजभाशा कार्यान्वयन समिति के सदस्यों ने किया। कार्यक्राम के आयोजन में श्री मानस रंजन साहू, श्री पवन वर्मा, अरण कुमार, मनीष कुमार, सुवर्णा भारदे, जी एस एन मूर्ति आदि ने अपना सहयोग दिया। धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ।

रक्षा धातुकर्मीय अनुसंधान प्रयोगशाला (डी एम आर एल), हैदराबाद

रक्षा धातुकर्मीय अनुसंधान प्रयोगशाला (डी एम आर एल), हैदराबाद में 1 सितम्बर 2014 से 16 सितम्बर 2014 तक हिन्दी पखवाड़े का आयोजन किया गया। पखवाड़े में कुल 07 प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिसके अंतर्गत निबंध, वाक्, पठन, टिप्पण एवं प्रारूपण, टंकण, प्रश्नोत्तरी, अंताक्षरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इन प्रतियोगिताओं में कुल 150 प्रतिभागियों ने भाग लिया। विभिन्न प्रतियोगिताओं के लिए अलग

मंचासीन राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सचिव एवं संयोजक, श्री जे एस यादव, मुख्य अतिथि डॉ राधेश्याम शुक्ल, कार्यकारी निदेशक, डा एस वी कामत एवं अन्य सदस्य।

अलग निर्णायक समितियों का गठन किया गया। समस्त निर्णायकों ने प्रतियोगिताओं को सुचारू रूप से संपन्न कराया एवं चयन किये गए विजेताओं की सूची दी।

16 सितम्बर को तम्हाण्कर सभागृह में हिन्दी दिवस तथा हिन्दी पखवाड़े के समापन समारोह का आयोजन किया गया। समापन समारोह का आरंभ दीप प्रज्वलन एवं वंदना के साथ किया गया। तत्पश्चात राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सचिव एवं संयोजक, श्री जे एस यादव ने सभागृह मे उपस्तिथ अधिकारियों एवं कर्मचारियों का स्वागत करते हुए वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत की। इसके बाद क्रमशः निदेशक महोदय एवं अन्य मंचासीन सज्जनों ने अपने–अपने वक्तव्य प्रस्तुत किये एवं राजभाषा की आवश्यकता तथा अधिक से अधिक कार्यान्वयन पर बल दिया।

सांस्कृतिक कायर्क्रम के अंतर्गत हास्य कविता एवं गीत का प्रस्तुतीकरण किया गया। इसके उपरांत श्रीमती अनुराधा पाण्डेय ने मुख्य अतिथि, डॉ राधेश्याम शुक्ल संपादक भास्वर भारत का परिचय प्रस्तुत किया, साथ ही मुख्य अतिथि को उनके संबोधन के लिये आमंत्रित किया। तत्पश्चात मुख्य अतिथि, डॉ राधेश्याम शुक्ल, संपादक भास्वर भारत ने अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया तथा राजभाषा हिन्दी की वर्तमान स्थिति से अवगत कराया। साथ ही साथ इसके विस्तार एवं भाषाई सरलीकरण पर भी प्रकाश डाला। कार्यक्रम के अंत में विभिन्न प्रतियोगिताओं के प्रतिभागियों को सह निदेशक, डॉ एस वी कामत ने अपने हाथों से पुरस्कृत किया तथा निर्णायकों को मुख्य अतिथि ने पुरस्कार प्रदान किये। अंततः सह निदेशक, डॉ एस वी कामत ने मुख्य अतिथि को स्मृति चिह्न प्रदान कर उनका सम्मान किया एवं धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ।

drdo.gov.in/drdo/pub/samachar/index.html

अनुसंधान केंद्र इमारत (आर सी आई), हैदराबाद

डॉ शुभदा वांजपे, दीप प्रज्ज्वलित कर पखवाड़े का उद्घाटन करती हुई।

अनुसंधान केंद्र इमारत (आर सी आई), हैदराबाद में 18 सितम्बर 2014 को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर उस्मानिया विश्वविद्यालय, हिंदी विभाग की प्रोफेसर एवं अध्यक्षा, डॉ शुभदा वांजपे मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थीं। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता, आर सी आई के निदेशक एवं उत्कृष्ट वैज्ञानिक, डॉ जी सतीश रेड्डी ने की।

डॉ जी सतीश रेड्डी, व्याख्यान देते हुए।

आर सी आई के प्रबंध सेवा निदेशक तथा राजभाषा कार्यान्वयन समिति के उपाध्यक्ष, श्री के राम शर्मा ने मुख्य अतिथि एवं सभा का स्वागत किया। साथ ही उन्होंने आर सी आई के राजभाषा प्रभाग की गतिविधियों पर विस्तृत रूप से प्रकाश डाला। इस कार्यक्रम के संयोजक, श्री काजिम अहमद थे। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्ज्वलन एवं वंदना के साथ हुआ।

अपना अध्यक्षीय संबोधन देते हुए डॉ जी सतीश रेड्डी ने दश में हिंदी के महत्व एवं आवश्यकता पर प्रकाश डाला और आर सी आई में राजभाषा से संबंधित चल रहे प्रयासों की सराहना की। इस समारोह की मुख्य अतिथि प्रोफेसर शुभदा वांजपे ने अपने सारगर्भित संबोधन में हिंदी की प्रयोजनमूलकता तथा विविध क्षेत्रों में और विविध रूपों में इसके प्रयोग पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने इस प्रयोगशाला की प्रशंसा की और भविष्य में भी इस कार्य को जारी रखने पर जोर दिया। उन्होंने इस तथ्य से सभा को अवगत कराया कि वास्तविक परिदृश्य में हिंदी अपने विकास पथ पर निरंतर अग्रसर है। अतः हम सभी को इसके सकारात्मक पहलू पर ध्यान देने की आवश्यकता है। मुख्य अतिथि के संबोधन से पूर्व श्री गौतम कुमार महतो ने उनका परिचय सभा के समक्ष प्रस्तुत किया।

आर सी आई में 2 सितम्बर 2014 से राजभाषा पक्ष मनाया गया जिसके अंतर्गत कुल सात प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं–निबंध, भाषण, अनुवाद, सुलेख, कविता–पाठ, गायन एवं अंत्याक्षरी। इन प्रतियोगिताओं का आयोजन हिंदी भाषी तथा हिंदीतर भाषी प्रतिभागियों के लिए अलग–अलग किया गया। मंचासीन अतिथियों ने अपने कर–कमलों द्वारा इन प्रतियोगिताओं के पुरस्कार विजेताओंए निर्णायकों एवं आयोजकों को पुरस्कृत किया। प्रतियोगिताओं में निर्णायकों की भूमिका निभाने वाले अधिकारियों में श्री एन वेंकटेश, डॉ आई एम छाबड़ा, श्री आर जयसिंह, श्रीमती अर्चना पाण्डेय, श्री किरण केसकर एवं श्री काजिम अहमद प्रमुख थे।

कार्यक्रम का सफल संचालन श्री राजीव रंजन ने किया। इस कार्यक्रम की आयोजन समिति में श्री मदनलाल कसौटिया, श्रीमती डी उमारानी, श्रीमती तिलोत्तमा पी मल्लिक, श्री पंकज रावत, श्री एम विनोद कुमार, श्री विकास कुमार, श्री विक्रांत कुमार, श्री बी पवन रेड्डी आदि उल्लेखनीय नाम थे। इस समारोह में श्री भुवनेश्वर प्रसाद एवं श्री रविन्द्र कुमार ने अपनी स्वरचित कविताओं तथा श्री आनंद प्रकाश पाण्डेय ने अपने मधुर गीत द्वारा सभा का मनोरंजन किया। कार्यक्रम के अंत में श्री आर जयसिंह ने मंचासीन एवं अन्य अतिथियों के प्रति आभार प्रदर्शित किया। यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि हिंदी दिवस समारोह का आयोजन अत्यंत सफल रहा।

उच्च उर्जा प्रणाली एवं विज्ञान केंद्र (चेस), हैदराबाद

उच्च उर्जा प्रणाली एवं विज्ञान केंद्र (चेस), हैदराबाद में 15 सितम्बर से हिंदी पखवाड़ा मनाया गयौ इस दौरान कुल 6 प्रतियोगिताएं, अर्थात निबंध, अनुवाद, सुलेख, कविता–पाठ, गायन एवं अन्ताक्षरी इत्यादि आयोजित की गईं। सभी प्रतियोगिताएं हिंदी एवं हिंदीतर

हिन्दी पखवाड़ा के उद्घाटन अवसर पर मंचासीन श्री जे पी सिंह, वैज्ञानिक जी; श्री सुरंजन पाल, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, चेस; डॉ राजनारायण अवस्थी, हिन्दी अधिकारी, ई सी आई एस; श्री पी राघवेन्द्र राव, वैज्ञनिक जी, चेस (बांये)।

प्रतिभागियों के लिए अलग–अलग आयोजित की गईं।

दिनांक 29 सितम्बर 2014 को हिंदी दिवस समारोह आयोजित किया गया। इस समारोह के मुख्य अतिथि के रूप में इलैक्ट्रॉनिक कॉरपोरेशन ऑफ़ इंडिया लिमिटेड (ई सी आई एल), हैदराबाद के हिंदी अधिकारी, डॉ राजनारायण अवस्थी को आमंत्रित किया गया। मंच पर आसीन अन्य गणमान्य अतिथियों में मुख्य अतिथि सहित चेस के निदेशक एवं उत्कृष्ट वैज्ञानिक, श्री सुरंजन पाल, सह निदेशक, श्री पी राघवेन्द्र राव तथा राजभाषा कार्यान्वन समिति के उपाध्यक्ष एवं आयोजन समिति के अध्यक्ष, श्री जे पी सिंह प्रमुख थे। श्री जे पी सिंह, उपाध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वन समिति ने सभा का स्वागत किया और राजभाषा पखवाड़े के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं का विवरण प्रस्तुत किया। चेस के सह–निदेशक, श्री पी राघवेन्द्र राव ने सभा को संबोधित करते हुए हिंदी के महत्त्व पर प्रकाश डाला और उन्होंने यह संकल्प लिया कि सामान्य वयवहार वाले पत्राचार में अंग्रेजी के साथ–साथ हिंदी में भी हस्ताक्षर करेंगे। उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, श्री सुरंजन पाल ने सभा को राजभाषा कार्यान्वन समिति के अध्यक्ष की हैसियत से संबोधित करते हुए इस बात पर ज़ोर दिया कि हिंदी को हमें राजभाषा के साथ–साथ राष्ट्रभाषा भी बनाना होगा। यह दायित्व हम सभी का है।

उन्होंने उपस्थित सभी व्यक्तियों से हिंदी संबंधी विषयों पर परिनामपूर्ण चर्चा की। इस समारोह के मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित डॉ राजनारायण अवस्थी ने अत्यंत सारगर्भित व्याख्यान द्वारा सभा को राजभाषा के रूप में हिंदी की दशा और दिशा से अवगत कराया और भारतीय संविधान में राजभाषा के रूप में हिंदी के महत्व पर विस्तृत रूप से प्रकाश डाला। इस उपलक्ष्य में प्रतियोगिताओं के विजताओं को पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम का संचालन सुश्री दीप्ती जोशी ने किया तथा हिंदी पखवाड़ा एवं हिंदी दिवस समारोह के संयोजक आर सी आई के श्री काजिम अहमद थे। कार्यक्रम का अंत श्री अनिल राज सिंह के धन्यवाद ज्ञापन द्वारा हुआ।

पाठकों की राय

आपकी राय हमारे लिए महत्त्वपूर्ण है क्योंकि इससे हमें इस पत्रिका को और अधिक उपयोगी तथा सूचनाप्रद बनाने तथा संगठन को बेहतर रूप में अपनी सेवा उपलब्ध कराने के अवसर प्राप्त होते हैं। डी आर डी ओ समाचार अपने सम्मानित पाठकों से प्रकाशित सामग्रियों तथा विषयों की गुणवत्ता के बारे में अपने सुझाव प्रेषित करने का अनुरोध करता है। कृपया अपने सुझाव निम्नलिखित पते पर भेजें:

संपादक, डी आर डी ओ समाचार, रक्षा वैज्ञानिक सूचना तथा प्रलेखन केंद्र (डेसीडॉक), मेटकॉफ हाउस, दिल्ली–110054 **ई-मेल : director@desidoc.drdo.in**

मुख्य सम्पादक: सुरेश कुमार जिंदल
सह मुख्य सम्पादक: बी नित्यानंद
सम्पादक: फूलदीप कुमार
सहायक सम्पादक: अशोक कुमार, दीप्ती अरोड़ा
सम्पादकीय सहायक: शालिनी छाबड़ा, संजय कटारे
मुद्रण: एस के गुप्ता, हंस कुमार
विपणन: आर पी सिंह

श्री सुरेश कुमार जिंदल, निदेशक, डेसीडॉक द्वारा डी आर डी ओ की ओर से मुद्रित एवं प्रकाशित
प्रकाशक : डेसीडॉक, मेटकॉफ हाउस, दिल्ली-110054 ; दूरभाष : 011-23812252 ; फैक्स : 011-23813465 ; ई-मेल : director@desidoc.drdo.in